Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Review Paper

जयपुर की लोक प्रिय संस्कृति में प्रथम पूज्य गणेश : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

वन्दना भारद्वाज [1*], डॉ. शिल्पी गुप्ता [2]

[1] शोधार्थी, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान,भारत

[2] एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान,भारत

Corresponding Author: *वन्दना भारद्वाज

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20254624

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र जयपुर के चार प्रमुख गणेश मंदिरों — गढ़ गणेश, परकोटा गणेश, मोती डूंगरी गणेश और नाहर के गणेश — के ऐतिहासिक, धार्मिक एवं लोक-सांस्कृतिक महत्व का विश्लेषण करता है। इन मंदिरों की स्थापना, स्थापत्य शैली, प्रतिमा स्वरूप, मान्यताओं एवं लोक परम्पराओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। शोध में मौखिक परम्पराओं, लोकगीतों, महंतों से साक्षात्कार तथा उपलब्ध लिखित स्रोतों का उपयोग किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि प्रत्येक मंदिर की अपनी विशिष्ट लोकआस्था है — गढ़ गणेश विनायक स्वरूप (बिना सूँड) में सम्भवतः भारत में एकमात्र हैं, परकोटा गणेश मुखाकृति स्वरूप में विवाह की कामना पूर्ण करते हैं, मोती डूंगरी में वाहन पूजन की परम्परा प्रचलित है, जबकि नाहर के गणेश तांत्रिक विधि से स्थापित एवं रोजगार-कामना हेतु पूजित हैं। यह शोध युवा पीढ़ी को भारतीय सनातन संस्कृति एवं धार्मिक धरोहर से जोड़ने के उद्देश्य से लिखित स्वरूप में प्रस्तुत किया गया है।

Manuscript Info.

- ✓ **ISSN No:** 2584-184X
- ✓ **Received:**10-01-2025
- ✓ **Accepted:**15-02-2025
- ✓ **Published:**28-02-2025
- ✓ **MRR:3(2):**2025;89-93
- ✓ **©2025, All Rights Reserved.**
- ✓ **Peer Review Process:** Yes
- ✓ **Plagiarism Checked:** Yes

How To Cite

वन्दना भारद्वाज, डॉ. शिल्पी गुप्ता.जयपुर की लोक प्रिय संस्कृति में प्रथम पूज्य गणेश : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन . Indian J Mod Res Rev. 2025;3(2):89-93.

कुंजी शब्द: गणेश, जयपुर, लोक-संस्कृति, गढ़ गणेश, परकोटा गणेश, मोती डूंगरी, नाहर के गणेश, लोकआस्था, मंदिर परम्परा, विनायक, तांत्रिक पूजा, राजस्थान, सांस्कृतिक धरोहर, लोकगीत, धार्मिक मान्यताएँ

© 2025वन्दना भारद्वाज, डॉ. शिल्पी गुप्ता.This is an open-access article distributed under the terms of the CreativeCommons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

परिचय

गणेश भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। उन्हें आदि देवता, देवताओं में प्रथम पूज्य और आदि पूज्य भी कहा गया है। किसी भी शुभ कार्य का आरम्भ करने से पहले उन्हें पूजने की परम्परा है। संस्कृति में देवी-देवताओं, मंदिर एवं धार्मिक स्थलों का महत्व आदिकाल से रहा है। राजस्थान के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक जीवन में यहाँ के देवी-देवताओं का स्थान विशिष्ट और महत्वपूर्ण है। ये देवी-देवता जनमानस में सामाजिक एकता, धार्मिक आस्था तथा सांस्कृतिक जागरण के ज्योतिपुंज माने जाते हैं।[1]

"यतो धर्म स्ततो जय" जहाँ धर्म है वहीं विजय है। धर्म का अर्थ धारण करने योग्य आचरण, वस्तु इत्यादि है। मनुष्य का आचरण या उसके द्वारा धारण परम्परा संस्कृति का मूल मंत्र है। इस दृष्टिकोण से जयपुर एक सांस्कृतिक नगर है।[2] जहाँ सांस्कृतिक धारा प्राचीन काल से लेकर अब तकअविरल गति से चली आ रही है। जयपुर मंदिरों का शहर है, बनारस के बाद सबसे ज्यादा मंदिरजयपुर में ही हैं।[3]

जयपुर के लोक समाज में उनके अपने आराध्य देवी-देवता हैं, जिनमें गणेश, शिव, पार्वती, राम, कृष्ण, हनुमान, भैरव, लक्ष्मी आदि प्रमुख हैं। आमजन इन देवी-देवताओं की अपनी-अपनी आस्था एवं विश्वास के अनुसार पूजा करते हैं। इनमें प्रथम पूज्य गणेश का विशेष महत्व है।

जयपुर की मौखिक परम्परा में अनेक गणेश मंदिर दिखाई देते हैं, जिनमें गढ़ गणेश, परकोटा गणेश, मोती डूंगरी गणेश और नाहर के गणेश मंदिर में लोक आस्था अधिक दिखाई देती है। इस संदर्भ में लिखित जानकारी का अभाव है, जबकि इनके बारे में इतिहास एवं संस्कृति के आधार पर भीअध्ययन किया जाना चाहिए। जिससे इन मंदिरों की महत्ता पर प्रकाश डाला जा सके एवं इनकेसंदर्भ में लिखित स्रोतों की उपलब्धता जनसामान्य को सुलभ हो सके।

गढ़ गणेशमंदिर

राजस्थान के जयपुर शहर की उत्तर दिशा में स्थित अरावली पर्वत श्रृंखलाओं में नाहरगढ़किले की पहाड़ी के पास ऊँची पहाड़ी पर गढ़ गणेश (दक्षिणमुखी) मंदिर की स्थापना 18वीं शताब्दी (1740 ई.) में की गई थी। इस मंदिर का निर्माण महाराजा सवाई जयसिंह द्वितीय ने अश्वमेध यज्ञके आयोजन के साथ करवाया था, किन्तु इस संबंध में स्थानीय लोगों की मान्यता है कि यह मंदिर यहाँ पौराणिक काल में भी स्थित था। सवाई जयसिंह द्वितीय ने तो इस मंदिर का जीर्णोद्धार करवायाथा। गढ़ (किला) पर स्थित होने के कारण इनका नाम गढ़-गणेश पड़ा। यह मंदिर 500 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। इस मंदिर तक पहुँचने के लिए 365 सीढ़ियों (प्रतिदिन एक सीढ़ी) का निर्माणकिया गया। जयपुर की नींव स्थापित करने से पहले जयसिंह द्वितीय ने जो यज्ञ (अश्वमेध यज्ञ) करवाया था, उसकी भस्म से गणेश जी की प्रतिमा का निर्माण कर गढ़ में स्थापित किया।[4]

गणेश जी की सेवा-पूजा के लिए सिद्धपुर (गुजरात) के पंडित स्वरूप नारायण औदीच्य कोनियुक्त किया गया। वर्तमान समय में औदीच्य परिवार की तेरहवीं पीढ़ी के पंडित प्रदीप कुमार औदीच्य गढ़-गणेश जी की सेवा कर रहे हैं। इस मंदिर में गणेश जी विनायक स्वरूप (बिना सूँड वाले) मेंविराजमान हैं।[5]

संभवत: पूरे भारत में विनायक स्वरूप गणेश जी का यह एक मात्र मंदिर है। इसमंदिर में गणेश जी पूरे परिवार (रिद्धि-सिद्धि तथा शुभ-लाभ) के साथ हैं तथा यहाँ आँकड़े की जड़ से बने गणेश जी भी सुशोभित हैं। गणेश जी को चूरमे के लड्डू का भोग लगता है।

महाराजा जयसिंह द्वितीय ने इस मंदिर का निर्माण इस प्रकार से करवाया कि वे प्रतिदिनसुबह सिटी पैलेस की ऊपरी मंजिल (चंद्रमहल) से दूरबीन द्वारा मूर्ति के दर्शन कर सकें। वे गणेश जी के दर्शन करके ही अपनी दिनचर्या शुरू करते थे। इस मंदिर से सिटी पैलेस, गोविन्ददेवजी एवं अल्बर्ट हॉल एक सीध में दिखाई देते हैं। यहाँ वर्षा के जल को संग्रह करने के लिए प्राचीन टांका भी है।[6]

इस मंदिर में काले पत्थर से निर्मित दो मूषक प्रतिमाएं भी हैं। लोगों का विश्वास है कि जोभक्त इन मूषकों के कान में अपनी इच्छाएं बताते हैं वह अवश्य पूर्ण होती हैं। यहाँ लोग पत्थर से घर भी बनाते हैं। उनका मानना है कि ऐसा करने से उनका घर जल्द ही बन जाएगा। विशेष प्रयोजन केलिए मिट्टी के गणेश ले जाने की भी परम्परा है। गणेश चतुर्थी से पहले भाद्रपद की चौथ से मंदिर में धार्मिक अनुष्ठान शुरू हो जाते हैं और ऋषि पंचमी को बड़ा मेला भरता है। छठ पर गणेश की परिक्रमाबड़ी चौपड़ पर ध्वजाधीश गणेश मंदिर तक जाती है। गणेश चतुर्थी के दूसरे दिन भगवान गणेश कीशोभायात्रा निकलती है जो मोती गणेश से शुरू होती है तथा उसका समापन गढ़-गणेश पर होता है।

भगवान गणेश को केसरिया ध्वज चढ़ाया जाता है। आषाढ़ी दशहरा पर पाटोत्सव (स्थापना दिवस) मनाया जाता है।[7]

दीपावली के बाद पहलेबुधवार को "अन्नकूट" का भोग लगाया जाता है तथा पौष माह में "पौष बड़े" का आयोजन किया जाता है। फाल्गुन माह में फागोत्सव का आयोजन किया जाता है। विशेष अवसरों पर फूल बंगला झांकीसजाई जाती है। इस मंदिर से जयपुर का सुंदर दृश्य दिखाई देता है। मंदिर में यूँ तो रोजाना ही दर्शनार्थी पहुँचते हैं, लेकिन बुधवार को यहाँ अच्छी-खासी रौनक रहती है। मेले के समय हजारों कीसंख्या में भक्त आते हैं।

गढ़- गणेश की महिमा का बखान इस लोक गीत में मिलता है:—

रिद्धी सिद्धी भरतार, नित की लाडु खाव छः
गढ़-गणेष छः नाम, बैठया मौज उड़ाव छः।
ब्रहमपुरी की माही आओ, सीधा छतरी कान्ही जावो
जातां-जातां थोड़ी दूर, पर ही घाटीआव छः।
पूरब कान्ही मूण्डो करल्योध्यान गजानन्द जी को धरल्यो
चढ़ता जावो इक - इक नाल ,नानी सपना आव छः।

रिद्धी-सिद्धी भरतार...।
करल्यो ला जब घाटी पार, दीख ली जयपुर की बहार
ऊपर बैकुण्ठाको बाग, सारी हार मिटाव छः
मंगल गाता मायां जावो, गणपत जी का दरषन पावो

© 2025वन्दना भारद्वाज, डॉ. शिल्पी गुप्ता.This is an open-access article distributed under the terms of the CreativeCommons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

षीष निवातां अरज सुणावो, ये सब काम बणाव छः

रिद्धी-सिद्धी भरतार..।
बैठ्या जयपुर कांनी झांक, साहे गढ़ किला क नाक
चन्द्र महल स महाराजा न, नित की रूप दिखाब छः
रिद्धी-सिद्धी..।

बायीं आरे भरयो छः टांको, ऊपर जीमण करलो थाको
शिव शंकर र बेटा का राज म भाग्यां घुटाव छः
जो यां का चरणा म आव, मन का साचे या मंगल पाव
चरण युगल म शीश नवाव, गोपी हरजस गाव छः
रिद्धी-सिद्धी भरतार..[8]

इस लोकगीत में गणेश जी के बारे में विस्तार से बताया गया है कि वे रिद्धि-सिद्धि के पति हैं तथा रोज ही लड्डू खाते हैं। गढ़-गणेश उनका नाम है और बैठकर मौज उड़ाते हैं। आगे उनके स्थान के बारे में बताया गया है कि ब्रह्मपुरी के अंदर आओ, सीधे छतरी (शाही श्मशान) की तरफ जाओ। जाते-जाते थोड़ी दूर पर ही घाटी आती है। पूर्व दिशा की ओर मुँह करके गणेश जी को स्मरण करते हुए एक-एक सीढ़ी चढ़ते जाओ। सीढ़ी चढ़ते-चढ़ते तुम्हें नानी याद आ जाएगी (घबरा जाना/कठिनाई महसूस होना)। जब तुम घाटी पार कर लोगे तो तुम्हें जयपुर की बहार दिखाई देगी। ऊपर का दृश्य देखकर तुम्हारी सारी थकान मिट जाएगी। मंगल गीत गाते हुए गणेश जी के दर्शन करो। शीश झुकाकर अपनी विनती सुनाओ, ये सब काम बनाते हैं। यह गणेश जी जयपुर की तरफ देखते हुए किले पर विराजमान हैं। चन्द्रमहल से जयपुर के महाराजा रोज ही इनके दर्शन करते हैं। ऊपर बायीं ओर पानी का एक टांका है जहाँ पर जीमण भी कर सकते हैं। शिव-शंकर बेटे के राज में भांग घुटवाते हैं। जो इनके चरणों में आता है उसका सब काम भगवान गणेश जी करते हैं। इस तरह की चर्चा इस गीत में की गई है।
इस लोकगीत द्वारा गढ़-गणेश जी का संपूर्ण विवरण मिलता है। इस मंदिर की स्थापना के 300 वर्ष बाद भी भगवान गणेश की तस्वीर सामने नहीं आई है, सिर्फ जाकर ही भगवान के दर्शन किए जा सकते हैं।

परकोटा गणेश

करीब 300 साल पहले जयपुर शहर के चांदपोल में यह गणपति प्रकट हुए हैं। जयपुर की स्थापना के समय इनके मंदिर की स्थापना की गई।[9] यह मूर्ति प्राकृतिक और चमत्कारिक है, इसे किसी ने स्थापित नहीं किया है। इस मंदिर में गणेश जी मुखाकृति स्वरूप में हैं, जिस पर सिंदूर का चोला चढ़ाया जाता है। सन् 1985-86 में पंडित चुन्नीलाल जी जोशी द्वारा रिद्धि-सिद्धि एवं शुभ-लाभ की मूर्तियाँ स्थापित की गईं।[10] इस मंदिर के द्वार पर दो सफेद रंग की मूषक प्रतिमाएँ भी हैं। परकोटा (पुराना जयपुर शहर) में स्थित होने के कारण यह परकोटा गणेश कहलाते हैं।इस मंदिर के द्वार पर दो सफेद रंग की मूषक प्रतिमाएँ भी हैं। परकोटा (पुराना जयपुर शहर) में स्थित होने के कारण यह परकोटा गणेश कहलाते हैं।

लोक मान्यता के अनुसार यहाँ 7 या 11 बुधवार दर्शन मात्र से अविवाहितों का विवाह हो जाता है। यहाँ प्रत्येक माह पुष्य नक्षत्र में भक्तों द्वारा अभिषेक किया जाता है। हर बुधवार भगवान गणेश को चोला चढ़ाया जाता है। ग्रीष्म ऋतु में ज्येष्ठ माह में जल बिहार झांकी एवं फूल बंगला झांकी सजाई जाती है। गणेश चतुर्थी के अवसर पर एक दिन पहले सिंजारा महोत्सव मनाया जाता है जिसमें भगवान गणेश को मेहंदी लगाई जाती है तथा भक्तों में बाँटी भी जाती है। गणेश चतुर्थी के दिन गणेश जी को सोने का वर्क चढ़ाया जाता है एवं 11,000 मोदकों की झांकी सजाई जाती है।[11] शाम के समय 1100 दीपों से महाआरती की जाती है। इस अवसर पर स्थानीय कलाकारों द्वारा भजन संध्या का आयोजन किया जाता है। यहाँ कार्तिक माह में अन्नकूट महोत्सव तथा पौष माह में पौष बड़ा का आयोजन किया जाता है। यहाँ पाटोत्सव नहीं मनाया जाता। गणेश चतुर्थी पर मेला लगता है।

मोती डूंगरी गणेश मंदिर

यह मंदिर मोती डूंगरी की तलहटी में स्थित है। यहाँ स्थापित गणेश प्रतिमा जयपुर नरेश माधोसिंह प्रथम की पटरानी के पीहर मावली से 1761 ई. में लाई गई थी। उस समय 500 साल पुरानी यह प्रतिमा गुजरात से मावली आई थी। सेठ पल्लीवाल मूर्ति लेकर जयपुर आए, तब गणेश चतुर्थी को विद्वानों ने अनुष्ठान कर मोती डूंगरी में विराजमान किया।
अथर्ववेद के अनुसार मोती डूंगरी के गणपति "चतुर्हस्तं पाशमंकुश धारिणम्" के अनुरूप एकदंत एवं मूषक ध्वज के साथ रिद्धि-सिद्धि और शुभ-लाभ के स्वरूप हैं।[12] यहाँ दाहिनी सूँड वाले गणेश जी की विशाल प्रतिमा है जिस पर सिंदूर का चोला चढ़ाकर भव्य श्रृंगार किया जाता है। यह मंदिर नागर शैली में बना है।[13] मंदिर के सामने सीढ़ियाँ और तीन द्वार हैं। दो मंजिला भवन के बीच का जगमोहन ऊपर छत तक है तथा जगमोहन के चारों ओर दो मंजिला बरामदे हैं। मंदिर का पिछला भाग पुजारी के निवास स्थान से जुड़ा है। मोती डूंगरी की पहाड़ी पर प्राचीन शिव मंदिर है जो वर्ष में एक बार शिवरात्रि पर खुलता है।
कोई भी व्यक्ति नया वाहन खरीदता है तो उसे सबसे पहले मोती डूंगरी गणेश मंदिर में लाने की परंपरा है। नवरात्र, रामनवमी, दशहरा, धनतेरस और दीपावली जैसे खास मुहूर्त पर वाहनों की पूजा के लिए यहाँ लंबी कतारें लग जाती हैं। इस मंदिर को लेकर लोगों की मान्यता है कि यहाँ वाहन की पूजा करने से भगवान उनके वाहन को दुर्घटना से बचाते हैं और परिवार में सुख-समृद्धि की वृद्धि करते हैं। इसके अलावा यहाँ विवाह के समय पहला निमंत्रण पत्र मंदिर में चढ़ाने की परंपरा है। मान्यता है कि निमंत्रण पर गणेश उनके घर आते हैं और शादी-विवाह के कार्यों को शुभता से पूर्ण करवाते हैं।[14] हर बुधवार यहाँ मेला लगता है। गणेश चतुर्थी पर आने वाले भक्तों की संख्या लाख का आँकड़ा पार कर जाती है। इस मंदिर में प्रतिवर्ष अन्नकूट महोत्सव तथा पौष बड़ा महोत्सव भी आयोजित किए जाते हैं। गणेश जी को लड्डू का भोग लगता है।
भट्ट मथुरानाथ शास्त्री ने "जयपुर वैभवम्" ग्रंथ में लिखा कि गणेश चतुर्थी पर लोग घरों के दरवाजों पर धूप, दीप, सिंदूर आदि से गणेश

© 2025वन्दना भारद्वाज, डॉ. शिल्पी गुप्ता.This is an open-access article distributed under the terms of the CreativeCommons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

जी का पूजन करते हैं। 1842 के "दस्तूर कौमवार" में दर्ज रिकॉर्ड के मुताबिक महाराजा गणेश पूजन करते तब गुड़-धानी बंटती।[15]

लोकगीतों के माध्यम से गणेश जी को घर आने का न्योता दिया जा रहा है :—

मोती डूंगरी जा आई रे, म्हारो न्यौतियो गणेश म्हारे घर आवो जी गणेश, रिद्धि-सिद्धि ल्यावो जी गणेश।

इस लोकगीत के माध्यम से मोती डूंगरी गणेश जी को घर आने का न्योता दिया जा रहा है कि मेरे घर आवो जी गणेश, रिद्धि-सिद्धि (धन-वैभव) लाओ जी गणेश, मेरे काम संभालो गणेश।

मोती डूंगरी का मोटा ओ गणेश, मनावां थान आया घी सर चावल चीनी का दातार ओ गणेश, मनावां थान आया घी सर।

इस लोकगीत में गणेश जी को मनाते हुए अन्न व धन के दान की विनती की गई है। इन लोकगीतों द्वारा आमजन अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं।

नहर के गणेश

नाहरगढ़ अभयारण्य क्षेत्र में गढ़-गणेश मंदिर की तलहटी में प्राचीन नहर के गणेश जी का मंदिर स्थित है। यह मंदिर तांत्रिक विधि द्वारा निर्मित है। नहर के पास स्थित होने के कारण यह नहर के गणेश कहलाए। यह मंदिर लगभग 250 साल पुराना है।

तंत्र साधना करने वाले ब्रह्मचारी बाबा के किए गए यज्ञ की भस्म से भगवान गणेश का यह विग्रह व्यास रामचंद्र ऋग्वेदी ने प्राण-प्रतिष्ठित किया था।[16] उनकी पाँचवीं पीढ़ी आज भी यहाँ पूजा-अर्चना कर रही है। इस मंदिर की खास बात यह है कि यहाँ दक्षिणावर्ती सूँड वाले गणेश जी विराजमान हैं, जिन्हें सिद्धि विनायक माना जाता है। यह तंत्र विद्या से पूजे जाते हैं। यह प्रतिमा 5 फीट 6 इंच ऊँची और 4 फीट चौड़ी है। इनके बाईं ओर शिव पंचायत है।

यहाँ उल्टे स्वास्तिक बनाने की भी बड़ी मान्यताएँ हैं। कहा जाता है कि यहाँ उल्टा स्वास्तिक बनाने से लोगों के सारे बिगड़े काम बनने शुरू हो जाते हैं। हालाँकि मंदिर के युवाचार्य मानव शर्मा का कहना है कि यह धार्मिक मान्यता है। मंदिर प्रशासन ने कभी उल्टा स्वास्तिक नहीं बनाया। कई भक्तों की मनोकामनाएँ पूर्ण हुईं, जिसके बाद यहाँ आने वाले भक्त उल्टा स्वास्तिक बनाते हैं। नहर के गणेश जी को पारंपरिक राजशाही जरी की पोशाक धारण कराई जाती है। रत्न और गोटा-पट्टी जड़ी इस पोशाक का वजन 20 किलो है।[17] पुराने समय से ही जरी की पोशाक को जयपुरी शान माना जाता रहा है।

स्थानीय लोगों की मान्यता के अनुसार यह गणेश जी रोजगार हेतु पूजे जाते हैं। जो भक्त सच्चे मन से 11 बुधवार यहाँ आता है, उसकी मनोकामना पूर्ण होती है। इस मंदिर में गणेश चतुर्थी पर विशाल मेला लगता है, जिसमें हजारों श्रद्धालु आते हैं। इसके अलावा अन्नकूट, पौष बड़ा, छप्पन भोग का भी **आयोजन किया जाता है। यहाँ यह भजन गाया जाता है :—**

दाहिनी सूँड नाहर के गणपति, मनवांछित फलदायक हैं। भक्त जनों के दुःख क्षणों में, होते सदा सहायक हैं।

इस भजन में बताया गया है कि दाहिनी सूँड नाहर के गणपति मनचाहा फल देने वाले हैं तथा भक्त जनों के दुःख के क्षणों में सदा सहायक होते हैं।

इस शोध अध्ययन द्वारा जयपुर के प्रथम पूज्य गणेश की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए विभिन्न गणेश मंदिरों का अध्ययन किया गया जिसमें हमने देखा कि यहाँ अधिकांश मंदिरों में भगवान गणेश परिवार के साथ हैं तथा सभी मंदिरों में लोगों का लोकविश्वास और विभिन्न मान्यताएँ जुड़ी हुई हैं, जिनमें लोक आस्था हावी हैं।

गढ़-गणेश संभवतः पूरे भारत में विनायक स्वरूप (बिना सूँड वाले) का एकमात्र मंदिर है। यहाँ से विशेष प्रयोजन के लिए मिट्टी के गणेश ले जाने की परंपरा है। है। जिसके बारे में लोगों की धारणा है कि भगवान गणेश उनके कार्य शुभता से पूर्ण कर देंगे। परकोटा गणेश मुखाकृति स्वरूप में हैं। यहगणपति जयपुर की स्थापना के समय प्रकट हुए थे। इनके बारे में लोगों की मान्यता है कि यहाँ 7 या 11 बुधवार दर्शन मात्र से ही अविवाहितों का विवाह हो जाता है। मोती डूंगरी में भगवान गणेश चारहाथ, अंकुश तथा पाश धारण करने वाले, एकदंत व मूषक ध्वज के साथ रिद्धि-सिद्धि और शुभ-लाभ के स्वरूप हैं। इस मंदिर को लेकर लोगों की मान्यता है कि यहाँ वाहन की पूजा करने से भगवान उनकेवाहन को दुर्घटना से बचाते हैं और परिवार में सुख-समृद्धि की वृद्धि करते हैं। नाहर के गणेश जी तांत्रिक विधि द्वारा स्थापित हैं तथा तंत्र विद्या से पूजे जाते हैं। यहाँ दक्षिणावर्ती सूँड वाले गणेश जीविराजमान हैं, जिन्हें सिद्धि-विनायक माना जाता है। स्थानीय निवासियों के अनुसार यह गणेश जी रोजगार हेतु पूजे जाते हैं। जो भक्त सच्चे मन से 11 बुधवार यहाँ आता है, उसकी मनोकामना पूर्णहोती है।

पूजा-प्रार्थना व्यक्ति को आंतरिक संबल प्रदान करती है, उसे कर्म की ओर उद्यत करने हेतु प्रेरित करती है। व्यक्ति के विचारों एवं इच्छाओं को सकारात्मक बनाकर निराशा एवं नकारात्मक भावों को नष्ट करती है। अनादिकाल से अनेक नामों से गणेश दुःख, भय, चिंता आदि विघ्नों के हरणकर्ता के रूप में पूजित होकर मानवों का संताप हरते रहे हैं। वर्तमान समय में भावनात्मक एकता और अखंडता की रक्षा के लिए गणेश जी की पूजा का अपना विशेष महत्व है।

बदलते युग और समय के साथ हमारी सोच में परिवर्तन आने लगा है। पाश्चात्य शिक्षा और उसके प्रबल प्रभाव के कारण हम अपने सांस्कृतिक मूल्यों की अनदेखी करने लगे हैं। विशेषतः युवा पीढ़ी तेजी के साथ इस बहाव में बहने को तत्पर है। ऐसी भटकाव की स्थिति में उन्हें हमारी सनातन परम्पराओं, मान्यताओं और आस्थाओं का बोध कराना हमारा कर्तव्य बन जाता है। इस शोध का उद्देश्य जनमानस को संस्कृति से जोड़ना एवं देवी-देवताओं का महत्व समझाना है, जो लिखित स्वरूप में सर्वसाधारण को सुलभ हो सके।

सन्दर्भ

1. गोस्वामी प्रेमचन्द्र. राजस्थान : संस्कृति, कला एवं साहित्य. जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी; 2011. पृ. 137.
2. पांडे राम. जयपुर विहंगम सांस्कृतिक विवेचन. उदयपुर: पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र; 2010. पृ. 1.

© 2025वन्दना भारद्वाज, डॉ. शिल्पी गुप्ता.This is an open-access article distributed under the terms of the CreativeCommons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

3. शर्मा अर्चना. जयपुर राज्य व्यवस्था में धार्मिक प्रतीकों का महत्व : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य. शोधक. जयपुर; वॉल्यूम 47.
4. शेखावत जितेन्द्र सिंह. म्हारो जयपुर न्यारो जयपुर. जयपुर: पत्रिका प्रकाशन; 2022. पृ. 152.
5. औदीच्य प्रदीप कुमार. गढ़ गणेश महंत से व्यक्तिगत साक्षात्कार; 2023 जनवरी 22.
6. शेखावत जितेन्द्र सिंह. म्हारो जयपुर न्यारो जयपुर. जयपुर: पत्रिका प्रकाशन; 2022. पृ. 152.
7. शेखावत जितेन्द्र सिंह. म्हारो जयपुर न्यारो जयपुर. जयपुर: पत्रिका प्रकाशन; 2022. पृ. 152.
8. शर्मा कांता. भजन गायिका से व्यक्तिगत साक्षात्कार; 2023 जनवरी 29.
9. जयपुर शहर के चांदपोल में प्रकट हुए गणपति. जयपुर: Patrika; 2019 अगस्त 30 [उद्धृत 2023]. यहाँ उपलब्ध:https://www.patrika.com
10. शर्मा राहुल. परकोटा गणेश महंत से व्यक्तिगत साक्षात्कार; 2023 फरवरी 1.
11. 11,000 मोदकों की झांकी. जयपुर: Patrika; 2019 अगस्त 30 [उद्धृत 2023]. यहाँ उपलब्ध:https://www.patrika.com
12. शेखावत जितेन्द्र सिंह. म्हारो जयपुर न्यारो जयपुर. जयपुर: पत्रिका प्रकाशन; 2022. पृ. 151.
13. मोती डूंगरी में विराजित भगवान गणेश की प्रतिमा है चमत्कारी [इंटरनेट]. Punjab Kesari; 2017 नवम्बर [उद्धृत 2023]. यहाँ उपलब्ध:https://m.punjabkesari.in
14. भगवान गणेश का प्रसिद्ध मंदिर जहाँ भगवान को चढ़ता है सिंदूर का चोला, होती है हर मनोकामना पूरी. Patrika; 2018 सितम्बर 19 [उद्धृत 2023]. यहाँ उपलब्ध:https://www.patrika.com
15. शेखावत जितेन्द्र सिंह. म्हारो जयपुर न्यारो जयपुर. जयपुर: पत्रिका प्रकाशन; 2022. पृ. 150.
16. जयपुर नाहर के गणेश मंदिर, जानें क्या है मंदिर का इतिहास. ETV; 2022 अगस्त 30 [उद्धृत 2023]. यहाँ उपलब्ध: ETV Bharat.
17. नाहर के गणेश जी की पारंपरिक राजशाही जरी की पोशाक . Patrika; 2022 अगस्त 29. यहाँ उपलब्ध:https://www.patrika.com

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025वन्दना भारद्वाज, डॉ. शिल्पी गुप्ता.This is an open-access article distributed under the terms of the CreativeCommons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/